Page No. Date :

कला व वाणिज्य महाविद्यालय, वडूज

परियोजना का नाम

हिंदी साहित्य का इतिहास

नाव :- चव्हाण श्रद्धा सुरेश

रोल नं :- 535

इयत्ता :- T.Y. BA sem - VI

08/10

Page No. Date :

प्र.1) निम्नलिखित प्रतिनिधी कवियोंका सामान्य परिचय लिखिये।

① केशवदास :-

रीतिकाल के प्रमुख प्रवर्तक आचार्य केशवदास जी का जन्म धनाढ्य ब्राह्मण कुल में लगभग सं. 1612 में और मृत्यु सं. 1674 में मानी जाती है। इनके पिता काशीनाथपंत संस्कृत के धुरंधर विद्वान थे। 'शीघ्रबोध' नामक ज्योतिष ग्रंथ के वे निर्माता थे। इनका परिवार पंडितों का था, इनके सेवक भी संस्कृत बोलते थे। शायद इसी कारण उन्हें भाषा में कविता करते समय ग्लानि का अनुभव हुआ था, जिसकी क्षतिपूर्ति यत्र-तत्र पांडित्य प्रदर्शन में उन्होंने की है। केशवदास ओरछा नरेश महाराजा इंद्रजितसिंह की राजसभा में सम्मानित थे। राजा इन्हें अपना गुरु मानते थे। इन्हें इक्कीस गाँव दान में दिए थे। हिंदी में सम्मानित थे। राजा इन्हें अपना गुरु मानते थे। इन्हें हिंदी के प्रसिद्ध कवि बिहारी इनके पुत्र माने जाते हैं।

रचनाएँ :-

① रसिकप्रिया ② नख-शिख ③ कवि-प्रिया ④ छंदमाला ⑤ रामचंद्रिका ⑥ विज्ञानगीता ⑦ वीरसिंहदेव चरित

(8) रतन बावनी और (9) जहाँगीर जस-चंद्रिका

इनमें से प्रथम चार ग्रंथ रीति निरूपण की नूतन पद्धति से युक्त काव्यशास्त्रीय ग्रंथ हैं। 'रामचंद्रिका', प्रबन्धकाव्य, वाल्मीकि रामायण और हनुमन्नाटक के आधार पर लिखा हुआ आध्यात्मिक ग्रंथ है और अंतिम तीन संबंधित आश्रयदाताओं पर लिखे हुए चरित्र ग्रंथ हैं, जिनमें आश्रयदाताओं की वीर-गाथाएँ एवं यशोगान हैं। इस प्रकार केशवदास में काव्य-निर्माण की विविध शैलियों की क्षमता दृष्टिगोचर होती है।

केशवदास को रीतिकाल के प्रमुख प्रवर्तक आचार्य माना जाता है। उनकी चित्त-वृत्तियाँ काव्यशास्त्रीय निरूपण में अधिक रम-माण हुई हैं। आचार्यत्व की दृष्टि से उनका उनका महत्व अधिक है। 'रसिकप्रिया' रस-विवेचन से संबंधित ग्रंथ है। शृंगार को रसराज कहा है, रस दोषों का वर्णन भी किया है। कवि-प्रिया में कवि शिक्षा, अलंकार निरूपण और दोषों का भी विवेचन मिलता है। नख-शिख और छंदमाला में शीर्षक के अनुसार विवेचन किया गया है।

Scanned with CamScanner

2) बिहारी :-

बिहारी हिंदी साहित्य के लोक-प्रिय कवि हैं। इनका जन्म लगभग सं. 1652 तथा मृत्यु लगभग सं. 1720 ई. में हुई थी। वे माथुर चौबे थे। उनके पिता का नाम केसोराय या केशवराय था। कुछ विद्वान रीतिकाल के आचार्य केशवदास को इनके पिता मानते हैं। इनके एक भाई और बहन होने का उल्लेख मिलता है। ग्वालियर, मथुरा और वसुआगोविंदपुर में से इनका जन्मस्थान ग्वालियर ही अधिक उचित लगता है। बिहारी के पिता ग्वालियर छोड़कर ओरछा नरेश के पास चले गए थे, जहाँ उन्होंने काव्य ग्रंथों का अध्ययन किया। वृंदावन से संस्कृत तथा प्राकृत की शिक्षा प्राप्त की। संगीत का भी अध्ययन किया। वृंदावन में शाहजहाँ से भेंट हो गई और वो आगरा चले गए। शाहजहाँ के पुत्रजन्मोत्सव के अवसर पर आए राजाओं ने उनकी वार्षिक वृत्ति बाँध दी थी। इस सिलसिले में वे मिर्ज़ाराजा जयसिंग के दरबार में पहुँच गए थे, जब राजासाहब अपनी नई रानी के प्रेम में बुरी तरह से आसक्त थे। बिहारी के निम्न दोहे ने उनकी आँखे खोल दी..

"नहीं पराग नहीं मधुर मधु, नहीं विकास इही काल।
अलि कली ही सो बंध्यो, आगे कौन हवाल।।"

राजा साहब प्रसन्न हो गए और अपने पुत्र को पढ़ाने के लिए उन्हें गुरु नियुक्त किया। उनके लिखे हुए 700 दोहों के संग्रह को 'बिहारी सतसई' कहा जाता है, जो कवि बिहारी की अक्षय कीर्ति का आधारस्तंभ है।

बिहारी का एक ही ग्रंथ मिलता है 'बिहारी सतसई'। किंतु यह हिंदी के श्रेष्ठ-तम ग्रंथों में से एक है। यह मुक्तक काव्य है। मुक्तक के लिए जीवन का आधार फलक सीमित होता है। मुक्तक काव्य कवि के लिए भाषा की समास-शक्ति और कल्पना की समाहार शक्ति का होना अनिवार्य होता है। उसे अपने खंड दृश्यों में रस की अजस्त्र वेगवती धारा प्रवाहित करनी पड़ती है, जो पाठकों पर स्थायी प्रभाव उत्पन्न कर चम-त्कृत कर दे। मुक्तक के सभी गुण बिहारी के काव्य में विद्यमान थे। सतसई का एक-एक दोहा उज्ज्वल रत्न है। दोहे के सीमित घेरे में उन्होंने 'गागर में सागर' भर दिया है।

Scanned with CamScanner

Page No. Date :

प्र॰2 आधुनिक सामाजिक और राजनैतिक परिस्थितियाँ को लिखिए।

→ (1) सामाजिक परिस्थिति :-

इस युग के आंदोलनों को चारित्रिक दृढ़ता, अगाध विश्वास की भावना, धार्मिक आंदोलनों और सामाजिक क्रांति द्वारा प्राप्त हुई। सभी आंदोलनों का उद्देश्य समाजसुधार तथा भारतीय स्वाधीनता था। इन आंदोलनों में - राजाराम मोहनराय का ब्राम्हो समाज, स्वामी दयानंद सरस्वती का आर्य समाज, म॰ गो॰ रानडे जी का महाराष्ट्र समाज, श्रीमंती ऍनी बेसंट की थिओसोफिकल सोसायटी, योगी अरविंद, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी का मानवतावाद आदि ने सक्रिय भाग लिया।

ब्राह्मो समाज का उद्देश्य समाज की रूढ़ियाँ, अंधःविश्वास, कमियाँ, संकीर्णता आदि को कम करना था, किंतु स्वयं ईसाई रंग में इतने ~~रम~~ मे गए कि अपने धर्म को भी हेय मानने लगे। स्वामी दयानंद ने आर्य समाज की स्थापना ईसाई धर्म की प्रतिक्रिया के रूप में की। उनका व्यक्तित्व सामाजिक और धार्मिक क्षेत्रों में इतना क्रांतिकारी था,

colors

Scanned with CamScanner

Page No. Date :

जितना राजनीति में थी। उनका व्यक्तित्व सामाजिक और धार्मिक क्षेत्रों में इतना ही लोकमान्य तिलक जी का था। राष्ट्रीय आंदोलनों की सफलता का श्रेय स्वामी जी को ही दिया जाता है। उन्होंने राष्ट्रीयता का संचार और राष्ट्रभाषा प्रचार का महत्वपूर्ण कार्य किया प्राचीन संस्कृति का पुनरुत्थान, स्त्रीशिक्षा शिक्षा संस्थाओं का निर्माण, नारी तथा अछूतों के प्रति समादरयुक्त भावना, पुरानी रूढ़ियों का त्याग आदि उनके महत्वपूर्ण कार्य माने जाते हैं, जिसके लिए भारतीय जनता हमेशा उनकी ऋणी रहेगी। रानडे जी ने महाराष्ट्र में समाजसुधार और भारतीय संस्कृति के प्रति अनुराग की भावना से अनेक संस्थाएं चलाईं।

ईसाई धर्म प्रसार तथा अंग्रेजी साहित्य के परिणामस्वरूप भारत में धार्मिक एवं सामाजिक सुधारणा में नवचेतना आयी। बालविवाह, रूढ़ियाँ, जातिभेद, अंधश्रद्धा, हुंडेज-प्रथा, समुद्रयात्रा निषेध, जमींदारी प्रथा आदि का विरोध किया गया। अस्पृश्यता, छुआछूत, नारी जाति आदि की ओर समादर की भावना, विधवा विवाह का समर्थन आदि के साथ ही मानवतावाद तथा आध्यात्मिकता का प्रचार हुआ।

colors

Scanned with CamScanner

Page No. Date :

2) राजनीतिक परिस्थिति :-

हिंदी के आधुनिक साहित्य का मूल्यांकन करने के लिए तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों को देखना अत्यंत आवश्यक है। 18 वीं शती से प्रारम्भ ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन, रानी विक्टोरिया का शासन और उनका हिंदुस्थान पर पूरा अधिकार, देशी रियासतों की अंग्रेजी शासन में मिलना, अनेक कमिशनों, पंचों द्वारा की गई संधियाँ तथा राज्य चलाने के निमित्त अनेक योगों का कारखाना अनेक मिशन स्कूल आदि। साथ ही रेल, तार डाकखाना आदि की सुविधाएँ और इन्हीं से प्रेरित अनेक आंदोलन आदि महत्त्वपूर्ण घटनाएँ हैं कि जिनका परिणाम तत्कालीन साहित्य पर पड़ा है।

सन 1857 का स्वातंत्र्य-संग्राम इस काल की सबसे प्रमुख घटना है। यह स्वतंत्रता संग्राम भारतीय राजा-महाराजाओं के विश्वासघात से असफल हुआ, किंतु लोगों में अंग्रेजों के खिलाफ राष्ट्रीय जागरण की विद्रोह की आग भड़क उठी। परिणामस्वरूप भारत में विक्टोरिया शासन आ गया। अंग्रेजी के खिलाफ राष्ट्रीय जागरण की विद्रोह की आग भड़क उठी।

colors

Scanned with CamScanner

Page No. Date :

परिणामस्वरूप, भारत में विक्टोरिया शासन आ गया। अंग्रेजी शासन दृढ बनता गया। लॉर्ड मैकाले ने अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली का प्रचलन किया, जिसमें भारतीय शिक्षित समाज अंग्रेजी सभ्यता में बुरी तरह रंग जाने लगा। सन् 1885 में राष्ट्रीय कॉंग्रेस की स्थापना हुई सन् 1905 वंग-भंग के कानून से स्वाधीनता की भावना अधिक तीव्र बन गई। अनेक क्रांतिकारी संस्थाओं का निर्माण हुआ। लोकमान्य तिलक, अरविंद घोष, भगतसिंह, चंद्रशेखर आजाद, सुखदेव, राजगुरु, रास-बिहारी बोस आदि ने सक्रिय भाग लिया। जिसके सन 1919 में 'रौलेक्ट ऑक्ट' द्वारा भारतीयों की सभी आशाओं पर पानी फेर दिया, जिसके परिणामस्वरूप 'जालियाँवाला बाग' हत्याकांड हुआ। लोकमान्य तिलक, जी ने 'स्वराज्य यह मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है' की घोषणा की। सन् 1920 में कॉंग्रेस की बागडोर गांधीजी ने संभाली। हिंदू-मुस्लिमों की सम्मिलित कर असहयोग आंदोलन चलाया। विदेशी वस्त्र, सरकारी, स्कूल्स, कॉलेज, न्यायालय आदि का बहिष्कार किया।

colors

Scanned with CamScanner